

दिल्ली सल्तनत: पूरा इतिहास, वंश, शासक, प्रशासन और पतन के कारण (NCERT आधारित)

परिचय -

प्रिय विद्यार्थियों, आज हम मध्यकालीन भारत के एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्याय – दिल्ली सल्तनत – को विस्तार से समझेंगे। यह विषय न केवल स्कूली परीक्षाओं बल्कि UPSC, SSC, Railway, CTET और राज्य स्तरीय परीक्षाओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। कई बार छात्र विभिन्न वंशों, शासकों और उनके काल को लेकर भ्रमित हो जाते हैं। इस लेख को पढ़ने के बाद आप दिल्ली सल्तनत के हर पहलू को गहराई से समझ पाएंगे। साथ ही, आप अपने नोट्स बना सकेंगे और रिवीजन आसानी से कर पाएंगे। चलिए शुरू करते हैं।

Sources

- <https://ncert.nic.in/textbook/pdf/fehe102.pdf> (मध्यकालीन भारत)
- https://upsc.gov.in/sites/default/files/Syllabus_Preliminary_2025.pdf
- <https://pib.gov.in> (प्राचीन स्मारकों पर प्रेस विज्ञप्ति)
- <https://www.india.gov.in> (संस्कृति मंत्रालय – कुतुब मीनार)

दिल्ली सल्तनत किसे कहते हैं?

दिल्ली सल्तनत का अर्थ है सन् 1206 से 1526 ईस्वी तक दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाले पाँच मुस्लिम वंशों – गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश और लोदी वंश – के शासन काल को। इसकी स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी और अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में हराकर इसका अंत किया।

NCERT CLASS 7
हमारे अतीत - II

दिल्ली सल्तनत

(DELHI SULTANATE)

मध्यकालीन इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय

गुलाम वंश 1206-1290
खिलजी वंश 1290-1320
तुगलक वंश 1320-1414
सैय्यद वंश 1414-1451
लोदी वंश 1451-1526

क्या सीखेंगे?

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना
- प्रमुख राजवंश और शासक
- प्रशासनिक व्यवस्था
- समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति
- महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण

- UPSC, SSC, Railway
- State PCS, CTET
- स्कूल परीक्षाएँ
- आसान भाषा में संपूर्ण नोट्स

प्रमुख टॉपिक

- राजनीतिक इतिहास
- प्रशासन
- सैन्य विजय
- स्थापत्य कला
- सांस्कृतिक योगदान

PLUS PRELIMS & MAINS PYQs के साथ

FREE PDF DOWNLOAD

1. विषय का परिचय – दिल्ली सल्तनत क्या है?

दिल्ली सल्तनत का शाब्दिक अर्थ है – दिल्ली में स्थापित उस साम्राज्य का शासन, जो इस्लामी परंपराओं पर आधारित था। यह लगभग 320 वर्षों (1206-1526 ई.) तक चला। इस दौरान दिल्ली पर पाँच अलग-अलग वंशों ने राज किया। ये थे:

1. गुलाम वंश (मामलुक वंश) – 1206-1290 ई.
2. खिलजी वंश – 1290-1320 ई.
3. तुगलक वंश – 1320-1414 ई.
4. सैय्यद वंश – 1414-1451 ई.
5. लोदी वंश – 1451-1526 ई.

Quick Revision Point: दिल्ली सल्तनत के पाँच वंश याद रखने की ट्रिक – “गुल खा तू सै लो” (गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी)

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – दिल्ली सल्तनत की नींव कैसे पड़ी?

12वीं शताब्दी के अंत में भारत पर तुर्क आक्रमणकारियों ने हमले शुरू किए। मुहम्मद गौरी ने भारत में मुस्लिम शासन की नींव रखी। उसने 1192 ई. में दूसरे तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराया। गौरी की कोई संतान नहीं थी, इसलिए उसने अपने गुलाम (तुर्की दास) जनरलों को भारत के विभिन्न हिस्सों का शासक नियुक्त किया। उन्हीं में से एक थे कुतुबुद्दीन ऐबक, जिन्होंने गौरी की मृत्यु (1206) के बाद दिल्ली में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया और गुलाम वंश की शुरुआत की।

Real-Life Connection:

जैसे आज किसी कंपनी के मालिक के जाने के बाद उसके भरोसेमंद कर्मचारी अलग व्यवसाय शुरू कर देते हैं, ठीक वैसे ही गौरी की मृत्यु के बाद उसके गुलाम सरदारों ने अलग-अलग राज्य बना लिए। ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।

3. दिल्ली सल्तनत के विभिन्न वंश (विस्तार से)

3.1 गुलाम वंश (1206-1290 ई.) – मामलुक वंश

- संस्थापक: कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)
- प्रमुख शासक: इल्तुतमिश (1211-1236), रजिया सुल्तान (1236-1240), बलबन (1266-1287)
- महत्वपूर्ण तथ्य:
 - कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और कुतुब मीनार (लाल पत्थर की नींव) का निर्माण शुरू करवाया।
 - इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उसने चालीसा दल (तुर्की अमीरों का एक समूह) बनाया। उसने तोमर और चौहान किलों को मिलाकर दिल्ली को राजधानी बनाया।
 - रजिया सुल्तान दिल्ली सल्तनत की पहली और एकमात्र महिला शासिका थी। वह इल्तुतमिश की बेटी थी। लेकिन स्त्री होने के कारण उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और अंततः उसे मार दिया गया।
 - बलबन ने राजा का दर्जा (नियामत-ए-खुदाई) का सिद्धांत अपनाया। उसने सिजदा (घुटने टेककर माथा टेकना) और पैबोस (चरण चूमना) की प्रथा शुरू की। उसने चालीसा दल (तुर्की अमीरों) की शक्ति तोड़ी।

3.2 खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- संस्थापक: जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296)
- प्रमुख शासक: अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)
- विशेषताएँ:
 - खिलजी वंश ने दिल्ली सल्तनत की सीमाओं को दक्षिण भारत तक फैलाया। मलिक काफूर अलाउद्दीन का सेनापति था जिसने देवगिरि, वारंगल, मद्रै पर आक्रमण किए।
 - अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण प्रणाली (राज्य द्वारा कीमतें तय करना) लागू की। उसने चार बाजार बनवाए – अनाज, कपड़ा, घोड़े, और सामान्य वस्तुओं के लिए।
 - उसने स्थायी सेना (दाग व हुलिया प्रणाली) शुरू की – घोड़ों पर दाग लगाना और सैनिकों का ब्योरा रखना।
 - दक्षिण से लूटा हुआ धन उसने दिल्ली में भव्य निर्माणों में लगाया – अलाई दरवाजा, सिरी का किला (दिल्ली का दूसरा शहर)।
 - वह तुर्की दास (गुलाम) वंश के विपरीत अपने वंश का गौरव बढ़ाने वाला शासक था।

3.3 तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

- संस्थापक: गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325)
- प्रमुख शासक: मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351), फिरोज शाह तुगलक (1351-1388)
- मुहम्मद बिन तुगलक की प्रयोगशील नीतियाँ (और असफलताएँ):
 - राजधानी स्थानांतरण: दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) – लोगों को जबरन स्थानांतरित किया, बहुत पीड़ा हुई, अंततः वापसी।
 - टोकन मुद्रा (तांबे के सिक्के): चांदी के बजाय तांबे के सिक्के चलाए। लोगों ने नकली सिक्के बना लिए, इसलिए योजना असफल।

- खुरासन और काराचिल अभियान: विफल रहे और खजाना खाली हो गया।
- उसे विकसित सम्राट (नाटकीय शासक) भी कहा जाता है, लेकिन वह अत्यधिक शिक्षित, कवि और दयालु व्यक्ति था।
- फिरोज शाह तुगलक:
 - उसने चार प्रकार के कर लगाए – खराज (भू-राजस्व), जजिया (गैर-मुस्लिम कर), खम्स (युद्ध लूट का 1/5), जकात (मुस्लिम धार्मिक कर)।
 - उसने दार-उल-शफा (अस्पताल), फिरोजाबाद शहर बसाया, नहरें खुदवाईं (यमुना से घग्घर तक)।
 - उसने गुलामों की नियुक्ति (गुलाम विभाग – दीवान-ए-बंदगान) बनाया।

3.4 सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

- संस्थापक: खिज़्र खां (तैमूर का नियुक्त सूबेदार)
- यह वंश कमजोर रहा। तैमूर के आक्रमण (1398) के बाद सल्तनत बिखर गई। सैय्यद शासकों का नियंत्रण केवल दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों तक सीमित रहा।

3.5 लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- संस्थापक: बहलोल लोदी (1451-1489)
- प्रमुख शासक: सिकंदर लोदी (1489-1517), इब्राहिम लोदी (1517-1526)
- विशेषताएँ:
 - लोदी अफगान (पश्तून) वंश थे, तुर्क नहीं।
 - सिकंदर लोदी ने आगरा नगर बसाया, गज-ए-सिकंदरी (लंबाई की इकाई) शुरू की।
 - इब्राहिम लोदी कठोर और अलोकप्रिय था। उसके अफगान सरदारों ने विद्रोह कर दिया और बाबर (मुगल) को भारत आमंत्रित किया।
 - 1526 ई. में पानीपत का प्रथम युद्ध – बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर मुगल साम्राज्य की नींव रखी। इसके साथ ही दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया।

4. दिल्ली सल्तनत का प्रशासनिक ढाँचा

| प्रशासनिक पद | कार्य | महत्वपूर्ण तथ्य |
|----------------|---|--------------------------------------|
| सुल्तान | राज्य का सर्वोच्च प्रमुख | इस्लामी कानून (शरिया) के अनुसार शासन |
| वज़ीर | प्रधानमंत्री (राजस्व एवं वित्त) | दीवान-ए-वज़ारत – वित्त विभाग |
| आरिज़-ए-ममालिक | सेनाप्रमुख (सेना प्रमुख) | अलाउद्दीन खिलजी ने स्थायी सेना बनाई |
| सद्र-उस-सुदूर | मुख्य न्यायाधीश और धार्मिक विभाग प्रमुख | इस्लामी कानून लागू करना |
| दीवान-ए-रिसालत | विदेश मंत्री | राजदूतों एवं संदेशों से संबंध |

मुक्ति / इक्तादार प्रांतों (इक्ताओं) के शासक

राजस्व एकत्र करना एवं व्यवस्था
बनाए रखना

Real-Life Connection: जैसे आज राज्य में मुख्यमंत्री, मंत्री, जिला कलेक्टर होते हैं, वैसे ही सल्तनत में सुल्तान, वज़ीर और मुक्ति (प्रांत प्रमुख) होते थे।

5. अर्थव्यवस्था – भू-राजस्व, कर और बाजार

दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और युद्ध लूट पर निर्भर थी। मुख्य कर:

- खराज: भू-राजस्व – भूमि की उपज का 1/3 से 1/2 तक (विभिन्न शासकों में बदलाव)
- जजिया: गैर-मुस्लिमों (विशेषतः हिंदुओं) पर लगने वाला कर। ब्राह्मणों, महिलाओं, बच्चों, बूढ़ों को छूट थी। फिरोज शाह तुगलक ने इसे लागू किया।
- शरब (चुंगी) कर: व्यापार पर नगरपालिका कर
- घारी और चराई कर: पशुओं और चरागाह पर कर

अलाउद्दीन खिलजी का बाजार नियंत्रण:

उसने सभी वस्तुओं (अनाज, कपड़ा, घोड़े, दास) के दाम तय कर दिए। मुनि (गुप्तचर) रखे। व्यापारियों को पंजीकरण कराना पड़ता था। इससे सेना को सस्ता राशन मिलता था।

6. सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू

- समाज में जातियाँ: मुस्लिम (तुर्क, अफगान, ईरानी) और हिंदू (ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, शूद्र)। सुल्तान ऊपरी तबके के मुस्लिम थे।
- भाषा: फारसी राजभाषा थी, उर्दू का विकास इसी दौर में हुआ (हिंदी-फारसी मिश्रण)।
- साहित्य: अमीर खुसरो – न केवल कवि बल्कि संगीतज्ञ (खयाल, तराना, कव्वाली के जनक)। उन्होंने फारसी और हिंदी दोनों में रचनाएँ कीं।
- स्थापत्य कला: तुर्की-इस्लामिक शैली (मेहराब, गुंबद, मीनार)। उदाहरण – कुतुब मीनार, अलाई दरवाजा, तुगलकाबाद किला, फिरोज शाह कोटला।

7. दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण (परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण)

दिल्ली सल्तनत के पतन के निम्नलिखित कारण थे:

1. कमजोर उत्तराधिकारी: कोई निश्चित उत्तराधिकार प्रणाली नहीं थी, प्रत्येक मृत्यु के बाद गृहयुद्ध।
2. तैमूर का आक्रमण (1398): तैमूर ने दिल्ली को लूटा और नष्ट किया, जिससे सल्तनत की रीढ़ टूट गई।
3. सामंतों और प्रांतों का विद्रोह: बंगाल, जौनपुर, गुजरात, मालवा, दक्षिण में बहमनी और विजयनगर जैसे स्वतंत्र राज्य बन गए।
4. सैन्य कमजोरी: लोदी वंश के पास आधुनिक तोपखाना नहीं था, जबकि बाबर के पास तोपें थीं।
5. कठोर धार्मिक नीतियाँ: जजिया कर, मंदिर तोड़ना, हिंदुओं के प्रति भेदभाव – इससे जनता का समर्थन कम हुआ।

Exam Point: पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) प्रतीकात्मक रूप से दिल्ली सल्तनत का अंत है, लेकिन वास्तविक पतन तैमूर के आक्रमण (1398) के बाद शुरू हो गया था।

8. परीक्षा में पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण तथ्य (PYQ आधारित)

| प्रश्न (UPSC / SSC) | उत्तर |
|--|---|
| दिल्ली सल्तनत की स्थापना किसने की? | कुतुबुद्दीन ऐबक (1206) |
| किस शासक ने चालीसा दल (तुर्की अमीरों का समूह) बनाया? | इल्तुतमिश |
| दिल्ली सल्तनत की एकमात्र महिला शासक कौन थी? | रजिया सुल्तान |
| 'सिजदा' और 'पैबोस' की प्रथा किसने शुरू की? | बलबन |
| अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण क्यों लागू किया? | स्थायी सेना को सस्ता राशन उपलब्ध कराने के लिए |
| राजधानी दिल्ली से दौलताबाद किसने स्थानांतरित की? | मुहम्मद बिन तुगलक |
| टोकन मुद्रा (तांबे के सिक्के) किसने चलाए? | मुहम्मद बिन तुगलक |
| 'दीवान-ए-बंदगान' (गुलाम विभाग) किसने बनाया? | फिरोज शाह तुगलक |
| दिल्ली सल्तनत का अंतिम शासक कौन था? | इब्राहिम लोदी |
| किस युद्ध में इब्राहिम लोदी पराजित हुआ? | पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) |

9. आम गलतियाँ जो छात्र करते हैं

- गलती 1: इल्तुतमिश को दास वंश का संस्थापक मान लेना – जबकि संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक है, इल्तुतमिश ने व्यवस्था को मजबूत किया।
- गलती 2: रजिया सुल्तान को अंतिम शासक समझ लेना – वह तो गुलाम वंश की शासिका थी।
- गलती 3: मुहम्मद बिन तुगलक की सभी नीतियों को असफल बताना – वह प्रयोगशील था, बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली था।
- गलती 4: रजिया कर केवल अलाउद्दीन खिलजी ने लगाया – वास्तव में फिरोज शाह तुगलक ने इसे पूर्ण रूप से लागू किया।
- गलती 5: दिल्ली सल्तनत के पतन का एकमात्र कारण बाबर को मानना – जबकि आंतरिक कमजोरियाँ अधिक थीं।

10. मेमोरी ट्रिक्स (याद रखने के आसान तरीके)

पाँच वंशों का क्रम:

“गुल खा तू सै लो”

गुल – गुलाम, खा – खिलजी, तू – तुगलक, सै – सैय्यद, लो – लोदी

प्रमुख शासक (प्रत्येक वंश में):

- गुलाम: कु. इ. र. ब. – कुतुबुद्दीन, इल्तुतमिश, रजिया, बलबन
- खिलजी: ज. अ. – जलालुद्दीन, अलाउद्दीन
- तुगलक: ग. मु. फि. – गयासुद्दीन, मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज शाह
- सैय्यद: खिज़्र खां (केवल नाम याद रखें)
- लोदी: ब. सि. इ. – बहलोल, सिकंदर, इब्राहिम

अलाउद्दीन खिलजी की नीतियाँ (बाजार – सेना):

बाजार नियंत्रण (चार बाजार), दाग (घोड़े पर दाग), हुलिया (सैनिकों का विवरण)

11. त्वरित पुनरावृत्ति सारणी

| वंश | काल | संस्थापक | प्रमुख शासक | मुख्य उपलब्धि / विशेषता |
|--------|-----------|------------------|----------------------------|---|
| गुलाम | 1206-1290 | कुतुबुद्दीन ऐबक | इल्तुतमिश, रजिया, बलबन | कुतुब मीनार प्रारंभ, चालीसा दल, सिजदा प्रथा |
| खिलजी | 1290-1320 | जलालुद्दीन खिलजी | अलाउद्दीन खिलजी | बाजार नियंत्रण, स्थायी सेना, दक्षिण विजय |
| तुगलक | 1320-1414 | गयासुद्दीन तुगलक | मु. बिन तुगलक, फिरोज शाह | राजधानी स्थानांतरण, टोकन मुद्रा, नहरें |
| सैय्यद | 1414-1451 | खिज़्र खां | – | दुर्बल वंश, तैमूर आक्रमण के बाद |
| लोदी | 1451-1526 | बहलोल लोदी | सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी | आगरा बसाया, पानीपत युद्ध (1526) |

12. FAQs

प्रश्न 1: दिल्ली सल्तनत में कौन-कौन से वंश आए?

उत्तर: पाँच वंश – गुलाम (मामलुक), खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी।

प्रश्न 2: दिल्ली सल्तनत की राजधानी कहाँ थी?

उत्तर: मुख्यतः दिल्ली, लेकिन मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद (देवगिरि, महाराष्ट्र) को भी राजधानी बनाया था।

प्रश्न 3: रजिया सुल्तान की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर: 1240 ई. में उसे बंदी बनाकर मार दिया गया। वह दिल्ली सल्तनत की पहली और अंतिम महिला शासिका थी।

प्रश्न 4: अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण क्यों लागू किया?

उत्तर: उसकी स्थायी सेना को कम कीमत पर राशन और सामान उपलब्ध कराने तथा साम्राज्य में महंगाई को रोकने के लिए।

प्रश्न 5: टोकन मुद्रा क्या थी?

उत्तर: मुहम्मद बिन तुगलक ने चांदी के सिक्कों की जगह तांबे के सिक्के चलाए। लोगों ने नकली बना लिए, इसलिए यह प्रयोग असफल रहा।

प्रश्न 6: जजिया कर क्या था?

उत्तर: गैर-मुस्लिमों (हिंदू, जैन, बौद्ध) पर लगाने वाला धार्मिक कर। फिरोज शाह तुगलक ने इसे पूर्णतया लागू किया।

प्रश्न 7: दिल्ली सल्तनत का अंत कैसे हुआ?

उत्तर: 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया और मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

प्रश्न 8: कुतुब मीनार किसने बनवाई?

उत्तर: कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसकी नींव रखी, इल्तुतमिश ने तीन मंजिलें और बाद में फिरोज शाह तुगलक ने पाँचवीं मंजिल बनवाई।

प्रश्न 9: अमीर खुसरो कौन थे?

उत्तर: दिल्ली सल्तनत के प्रसिद्ध कवि, संगीतज्ञ और विद्वान। उन्होंने खयाल और कव्वाली का विकास किया।

प्रश्न 10: दिल्ली सल्तनत का सबसे शक्तिशाली शासक कौन था?

उत्तर: अलाउद्दीन खिलजी। उसने दक्षिण विजय, बाजार नियंत्रण और स्थायी सेना जैसे सुधार किए।

13. निष्कर्ष

प्रिय विद्यार्थियों, आज हमने दिल्ली सल्तनत को विस्तार से कवर किया। हमने जाना कि कैसे एक गुलाम सरदार (कुतुबुद्दीन ऐबक) ने राज्य की नींव रखी, कैसे अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार और सेना में सुधार किए, मुहम्मद बिन तुगलक ने प्रयोग किए (हालाँकि कई असफल रहे), और अंततः लोदी वंश की कमजोरियों के कारण सल्तनत का अंत हुआ। यह विषय UPSC, SSC, राज्य परीक्षाओं और स्कूल बोर्ड परीक्षाओं में बार-बार पूछा जाता है। आप इस लेख से नोट्स बना सकते हैं, रिवीजन के लिए तालिकाओं का उपयोग कर सकते हैं, और दी गई टिप्स से तिथियाँ व नाम याद कर सकते हैं।

यदि आपको यह लेख उपयोगी लगा हो, तो इसे अपने मित्रों के साथ भी साझा करें। आपके किसी भी प्रश्न के लिए कमेंट करें। आपकी परीक्षा के लिए शुभकामनाएँ!

लेखक: लेखक पिछले 4 वर्षों से UPSC एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अध्ययन से जुड़े हुए हैं। इनका वैकल्पिक विषय Public Administration रहा है। इन्होंने BCA तथा Advanced Diploma in

Software Engineering की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में ये DevOps एवं Server Engineer के रूप में कार्यरत हैं और Education, Technology, NCERT Foundation एवं Competitive Exam Preparation से जुड़े विषयों पर गहराई से अध्ययन एवं लेखन करते हैं।

[Read नए राजवंश और राज्य](#)

